कुमाऊँ के सम्राट

(चौथा भाग)

●

लेखक :

स्व० चिन्तामणी पालीवाल

●

प्रकाशक व मुद्रक :

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

●

प्रकाशन विभाग :

कुमाऊनी साहित्य सदन

चौरासी घण्टा बाजार सीताराम दिल्ली-६

द्वितीय संस्करण २०००] मई १९८६ मू Rs. 10-00

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक बाजार सीताराम

कुमाऊँ के सम्राट

[चौथा भाग]

●

लेखक:—

प० चिन्तामणि पालीवाल

●

प्रकाशक:—

पुरुषोत्तम दत्त पालीवाल

●

प्रकाशन विभाग:—

कुमाऊनो साहित्य सदन

चौरासी घन्टा बाजार सीताराम दिल्ली-६

●

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण ३०००] फरवरी १९७४ [मूल्य Rs 10-00

भूमिका

कुमाऊं के सम्राट चौथा भाग में कत्यूरी राजाओं के बाद चन्द राजाओं का ऐतिहासिक वर्णन छन्दोबद्ध कुमाऊंनी भाषा में किया गया है। यह सब कुमाऊ का इतिहास लेखक बद्रीदत्त पाण्डे के अनुसार किया गया है। इसमें चन्द राजाओं में सबसे पहले राजा पोहर चन्द व सोमचन्द थे। उसके बाद बड़े-बड़े राजा चन्द राजाओं में हुए जिन्होंने दिल्ली के बादशाह अकबर से भी सम्बन्ध स्थापित किया और मुसलमान राजाओं और नवाबों से मुकाबला किया। राजा ज्ञानचन्द ने गरुड़ ज्ञान चन्द की पदवी पायी और तरायी भावर का राज्य भी इनाम में पाया।

राजा मानिक चन्द और एक मुसलमान छोटा राजा खवास खां ने इसलाम साह के साथ मुकाबला किया खवास खाँ हार गया तो कुमाऊं के राजा मानिक चन्द की शरण में आया इसलिए इसलाम साह ने राजा मानिक चन्द को पत्र लिखा कि तुम खवास खाँ को छोड़ दो नहीं तो तुम्हारे कुमाऊं को उड़ा दिया जाएगा। राजा मानिक चन्द ने उत्तर दिया कि कि यह हमारे धर्म और राजनीति के खिलाफ है। हम जो शरण में आ जाता है उसको नहीं छोड़ सकते हैं, तुम्हें जो करना है वह करो इसी प्रकार के चन्द राजाओं में कई राजा हुए राजा रुद्र चन्द ने रुद्रपुर नाम का शहर बसाकर वहाँ कुमाऊंनी जनता को बसाया जब कि वह तरायी भावर मुसलमान नवाब ने अपना बना लिया था। उससे पहले यह भावर कत्यूरी राजाओं का था। चन्द राजाओं ने डोटी के राजाओं को भगाकर अपना राज्य बना लिया। चन्दों के वंशज कुंवर आनन्द सिंह को बताते हैं। इस प्रकार चन्दों की वीरता और पराक्रम का वर्णन किया गया है यद्यपि इसमें सम्पूर्ण राजाओं का सभी प्रकार का वर्णन अभी नहीं आ सका फिर भी इसमें कत्यूरी राजाओं के बाद चन्दों का वर्णन और उनके बल पराक्रम का वर्णन किया गया है।

कुमाऊ के गौरव कत्यूरों और चन्द राजा कुमाऊ के पूर्वजों का इतिहास यद्यपि विस्तृत रूप से नहीं मिलता है। इस कारण यह भी मालूम होता है कि अंग्रेजी शासन काल में कुमाऊं प्रखण्ड की तरफ सरकार का ध्यान कम रहा जिससे उस प्रखण्ड में शिक्षा की कमी रही और वहाँ की जनता को अधिकारों की भी कमी रही। अधिकार नहीं मिले यही कारण है कि वहाँ का लिखित इतिहास नहीं मिलता किंवदन्तियों के आधार पर या अठकिसन कनिघम व रुद्री दत्त पन्त आदि आदि शोधकर्ताओं के लिखे अनुसार भूतपूर्व संसद सदस्य कुर्माचल केशरी श्री बद्री दत्त पाण्डे जी ने जो खोजकर लिखा है उसमें से मैंने कुमाऊंनी कविता में थोड़ा सा लिखा है। गलती के लिए क्षमा प्रार्थी चिन्तामणि पालीवाल की कुमाऊ की जनता से निवेदन है कि यह पूर्वजों की चिरस्मृति को जरूर पढ़ें।

लेखक:—
चिन्तामणि पालीवाल
ग्राम कमराड़ वला नया अल्मोड़ा
कुमाऊनी साहित्य सदन
बाजार सीताराम चौरासी घण्टा
दिल्ली-६

मानस चतुशती के बर्ष सम्वत २०३१ में
कुमाऊंनी रामायण
गोस्वामी तुलसीदास जी कृत मानस
का
कुमाऊंनी अनुवाद सम्पूर्ण बालकान्ड कुमाऊंनी
चतुश्वर्णिक छन्दों में कुमाऊंनी साहित्य सदन द्वारा
अतिशीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

कुमाऊ के सम्राट

चौथा भाग — प्रथम खण्ड

सरस्वती की वन्दना

सरस्वती माता नमस्कार ।
सिद्धि करिए सब प्रकार ॥
प्रथम त्यरौ सुमिरौ नाम ।
सिर नवै बटि करु प्रणाम ॥
मन में त्यरौ ध्यान धरनू ।
चन्द राजाओं को बर्णन करनू ॥

● कुमाऊ में चन्द राजा कब से आये ? ●

चन्द राजा कसि आया कभणि यां आया ।
कति बटि आछिया यों कतियों रहया ॥
पैलियां कुमांऊ मजि पोहर चन्द आयो ।
बारा सौ यकसट में उ सोल सालौ हयो ॥
तीन पीड़ी बाद जब निरै सनतान ।
ज्ञान चन्द आया तब ककै की सन्तान ॥
तेरा सौ चौहत्तर में गद्दी में बैठाया ।
यो बातै कैं हर्ष देव जोशी बतै गया ॥

और लै छैं प्रचलित अनेकों कहानो ।
अठकिसन हिमन्टन किबदन्ती कनी ॥
वौरा बिष्टू उती का जो पैली रजा छीया ।
कत्यूरौ का समय में दवाइ गछीया ॥
कत्यूरौ दगड़ा तब अदाबट हैगे ।
उनरा मनम तब खुन्दक रहैगे ॥
सर्व श्री मान सिंह विकरम सिंह ।
और एक हया फिर बिकरम सिंह ॥
उगया प्रयाग राज तीरथ नाहणि ।
उती बै लिअया तब सोम चन्द कणी ॥
चन्द बंशी हया कनी चन्देला वंशजा ।
कनौजा का छीया कनी जय चन्द रजा ॥
ब्रह्मदेव रजा एक कत्यूरीया हया ।
सोंमचन्द कणी देखि खुशो हयी गया ॥
देखी वै उनरा तब आचार विचार ।
रहन सहन और सब शिष्ठाचार ॥
उनुलैं उकणि तब चोलि ब्यवै दिया ।
पन्द्रा बीघा जग लैकि दहेजम दिया ॥
और लकि भावरम इलाका दि दिया ।
वीलैं एक छोट-छोट राज बनै दिया ॥
चम्पावत मजि वीलै किला बनै लिया ।
चार ब्यक्ति फौजदार उति बनै दिया ॥

आखि ती ई चार बात प्रसिद्ध कहानी ।
कांकी चौरा तड़ागी ले चौधरी कहानी ॥
चन्द तब उबखत छवाटा २ हया ।
पछिला थो सोम चन्द भौत बढ़ि गया ॥
मांगाड़ा सालम लकि ध्यानी रौ समान ।
कालि कुमो परगना जतुक नमान ॥
हैइ गोय उबखत सोम चन्द राज ।
सोम चन्द भौत भलौ हय महाराज ॥
गुणवान नीतीवान और ज्ञानवान ।
सुन्दर लै सुचरित्र बड़ बुद्धिवान ॥
इक्कीस बरस तक सुराज चलाया ।
सात सौ अठत्तर में स्वरग सिधाय ॥
सोमचन्दो पुत्र फिर आत्म चन्द हया ।
सात सौ इक्कीस मजि गद्दी में बैठाया ॥
चन्द रजा सबु पैली कुशी बटि आया ।
प्रचालित बार्त छा य पुर्वज कै गया ॥
कुंवर आत्मचन्द भला रजा हया ।
राज बिसतार करिण वढ़ानै रहया ॥
धरम करम मजि रूचि धरं छिया ।
छवटा २ रजा तब सलाम कंछिया ॥
उनिस बरष तक राज करि गया ।
सात सौ चालिस मजि स्वरग सिधाया ॥

वीक बाद चन्द राजा पूरण चन्द हया ।
अठारा बरस उंलै राज करि गया ॥
उनु कणि छीया कनी शिकारौ कौ सौक ।
भावर तरायी मजि करं छीया मौक ॥
देवी देवताओं का उ भक्त लकि छीया ।
पूजा मजि धूम धाम खूब करं छीया ॥
जीतै जी आपण राज च्यलै कैं दि गया ।
पूनागिरी सेवा मजि आपू नहै गया ॥
सात सौ अट्ठावना में गया स्वर्ग धाम ।
बीक बाद रजा हया इन्द्र चंद नाम ॥
वीकणि बतानी सब अभिमानी हय ।
बीस वर्ष तक उलै राज करी गय ॥
पूरन चंद च्यल हय खंसार चन्द ।
वीक च्यल हय फिर राजा सुधा चन्द ॥
संसार चंदौ कौ रय पैती साल राज ।
सुधा चंद बीस वर्ष कय राज काज ॥
वीक पै हमीर चंद हरो चंद हया ।
तीन वर्ष राज कैबै जोगी हयी गया ॥
फिर हय चंदो मजि रज बीणा चंद ।
भोग बिलासौकौ ज्यादा ल्यूछियो आनन्द ॥
राज काज तरफ क्वे ध्यान निरौं छीया ।
रात दिन रनी वास मजि रहौं छीया ॥

आखरी य रजै की क्वै निरै सनतान।
तेर वर्ष राज करि न्है गोय निधान॥
चँदो को शासन अब है गो कमजोर।
खस राजाओं को तब बढ़ी गोछ जोर॥
उनुलै आपण तब झन्ड फहैराय।
चँद क्रमचारियों कैं मारी वै भजाय॥
खसौ लै उनरी तब कैं दीया लूट पाट।
सम्पत्ति सामाना तब कै दी बारा बाट॥
मारि दी क्वै भाजि गया हेशाबरौं हणि।
क्वै है गया शरणार्थी तब चिंतामणि॥
कत्यूरीया है गछीया छोटा २ रजा।
आपसै फूट लै छीया जगु २ मजा॥
चन्दों का दिवान मंत्रि उनरा या गया।
उनुहां उनुलै कय तुम रजा हया॥
कुमांऊ तुमरौ हय मूल स्थानी राज।
तुम किले चुपै रछा मौक एरौ आज॥
चढ़ाई कै दियौ तुम खस रजौ पारी।
हमलै मदद अब करूला तुम्हारी॥
आपण जाइया राज वापिस लिआवौ।
कुमांऊ कौ राज काज चैनै लैं चलाबों॥
कत्यूरौ लै कय तब कालि कुमों राज।
दैंज में दिरौछा हम च्येली जबै काज॥

दैज में देइया हम वापिस निलिना।
शास्त्रों विरुद्ध हम काम निकरना॥
चन्दों को छौ राज एति तुमै राज करौ।
हौंसला हिम्मत करौ वाहु बल धरौ॥
चन्दों का करमचारी तब चुपै गया।
खस राजाओं का तब आधीन है गया॥

दोहा—बखत पड़े खोटे बचन सबके सहीय रहीम।
समा दुशासन पट गहे गदा रहे गहि भीम॥

खसौ को बाजि गो तब विजय को डंका।
पन्द्रा पीढ़ी तक रय शासन निशंका॥
ढी सौ वर्ष रहया यो शासनाधिकारी।
मचि तब उत्तर में खलबली भारी॥
काशमीर कागंड़ा में कुमाऊं नैपाल।
आसाम लै दारजिलिंग बिछी गोय जाल॥
विन्ध्याचल राजपुताना खसीयों को राज।
कुछ लोग परतापी हया महाराज॥
उनरा शासनै को के जानकारी निछा।
नामावली याद कुछ एति जो दिरैछा॥

खस राजाओं की नामावली

वीजड़ जीजड़ और जाजड़ लै जड़ा।
कालू लै कमालू और जाइल नौ पड़ा॥

मूल गुरु पीड़ा बीड़ा नागू भागू नाम ।
जैपाल सौपाल लकि सन्डू इमा नाम ॥
खसौ का राजम जब चन्द राजपूता ।
भाजि वैतराराइ मजि गया राजदूता ॥
खसों का राज लै जब प्रजा दुखी हैगे ।
चन्द्र वंशी वीर चन्द्र कणि खोजि ल्येगे ॥
संसार चंना का जो रिस्तेदार छीया ।
नैपालै की तरायी में राज करं छीया ॥
श्री सौनखड़ एक सरदार छीया ।
उनुकै सबुलै तब बनै दी मूखिया ॥
सौनखड़ सरदार बड़ा नामी छीया ।
उनुलै भाजिया लोग सबै बुलैलिया ॥
वामख लै राजपूत वैंश्यौ का समेत ।
धन माल असबाब सामान समेत ॥
खस रजौ पर तब करि दी चढ़ाई ।
घमासान युद्ध तब है गेयी लड़ाई ॥
खस रजा सौपाल पै तब मारी गोय ।
वीर चन्द्र काली कुमौ रज है गोय ॥
बड़ी धूम धामै ले पै अमीशेख हय ।
वीर चन्द रजै लै पै तब यसौ कय ॥
राज पदाधिकारी जो पुर्वजौ का छीया ।
उनरा उनरा पद उनुकैं दी छीया ॥

महैरा फर्त्यल लकि तड़ागी लै बौरा ॥
चौधरी लै विष्ट लकि कांगड़ी लै औरा ॥
वीर चन्द रजै लै पै वीरता दिखाई ।
पूर्वजों का राज करि वापिसगो ल्याई ॥
पन्द्रह वर्ष राज करि नाम चलै गोय ।
दस सौ अस्सी में तब सुर लोक गोय ॥
वीर चन्द्रा बाद फिर चौबी रजा हया ।
बार सौ छीया नब्बे तक राज करि हय ॥
उनरा बारम और कुछ याद निछा ।
नामावलि याद छा जो यत करि दीछा ॥

बीच के चन्द राजाओं की नामावली

लक्ष्मी चन्द धरम चन्द कर्म चन्द हया ।
कल्याण लै नीम चन्द नर चन्द रया ॥
नानक लै राम चन्द भीस्म चन्द छीया ।
राजा नेम चन्द और ध्यान चन्द छीया ॥
दस सौ तीरानब्बे बै यतु रजा हया ।
बारह सौ छिया नब्बे तक राज करि गया ॥
वीक बाद रजा हयो त्रिलोक चन्द ।
सात साल राज कयो बहौतै आनन्द ॥
छकता लै भीमताल फिर जीति ल्यायो ।
भीमताल मजि एक किला पै बनायो ॥

त्रीलोक चन्दा बाद फिर तीन रजा हया।
उनरा धरम चन्द अमर चन्द हया
छीयातर बर्ष तक करि गया राज।
वीक बाद ज्ञान चन्द हया महाराज
ज्ञान चन्द जब हया शासनाधिकारी।
दिखाई ईनुलै तब बुद्धिमता भारी
पैली काम यस करौ दिल्ली मजि गया।
बादशाह तुगलक पास अरजी ली गया
बादशाह जौरा छीया तहैंत शिकार।
उति गया ज्ञान चन्द बहौतै हुस्यार
उति तब बिचितर एसी बात हैगे।
ज्ञान चन्द कणि जैलै पदवी मिलीगे
गरुड़ जाणछी एक पकड़ी स्याप।
रजैलै दिखाय तब आपण प्रताप
उड़न गरुड़ कणि मारि दियो तीर॥
गिरी गो गरुड़ तब धरती आखीर
ज्ञान चन्द वीरता कै देखी बैं तुगलक।
बहौतै प्रश्न रय अखरी तलक
तब बीलै पदवी दी गरु ज्ञान चन्द।
देखिवै अरजी तब बहौत आनन्द
अरजी में यस हय भाबरै तरायी।
हमू कणि दियी दियो तुमरी भलायी

पैली वटि य भावर कत्यूरौ कौ हय ।
कत्यूरौ का बाद अब चन्दौ छा कय ।।
खुशी हैबै बादशा लै लिखी दी फर्मान ।
कुमाऊं कै दियो कय तरायी तमान ।।
भागीरती तट तक चन्दौ कौ है गोय ।
गरुड़ ज्ञान चन्द तब नाम हैइ गोय ।।
कुछ दिन बाद फिर कुमाऊं में आय ।
तरायी भावर मजि शासन जमाय ।।
य कहानी चौदह सौ दस बारै हई ।
ज्ञान चन्द रज की जो विजय रहई ।।
कुछ दिन बाद फिर सम्भलों नवाब ।
तरायी भावर मजा आयी गोय आब ।।
तलीभाव भावर में जमायधिकार ।
मलिमाव मजि रयी चन्दो की सरकार ।।
एक नीलू कठैत छी सरदार वीर ।
उकणि पठयाय तब तलीमावै तीर ।।
तरायी भावर कणि जीति बैली आय ।
मुसलमानौ कणि वीलै मरि बै मजाय ।।
पैतालीस वर्ष तक सुराज चलाय ।
चौदा सौ उन्नीस मजि स्वरग सिधाय ।।
वीक बाद वीक च्यलौ हय हरीचन्द ।
गद्दी मजि वैठ तब करौ राज धन्द ।।

परजा छी मक्ति मार्गी धार्मिक विचार ।
धर्म-कर्म करं छीया भलि परकार ॥
कथा लै पुराण लकि भजन कीर्तन ।
हरि चर्चा मजि सदा रौछीया मगन ॥
चौदा सौ बीसम उलै बैकुण्ठ सिधाय ॥
च्यलौ छी उद्यान चन्द गद्दी में बैठाय ॥
येलै लकि राज कय कुल एकै साल ।
चौदा सौ इक्कीस मजि हय अन्त काल ॥
कुवा लै नौ हौवा लकि बावड़ी तलावा ।
मन्दिर लै धर्मशाला और पाठशावा ॥
बहौतै बामणै कै दी दान लै दक्षाण ।
गरीब बाल कौ की लै करछि रक्षीण ॥
वीक बाद हया फिर राजा आत्म चन्द ।
एलै करो राज काज और कार धन्द ॥
एकै साल मजि योंलै चलि बसि गया ।
इनरा सुपुत्र फिर हरिचन्द हया ॥
एक साल मजि योलै स्वरग सिधाय ।
राजा विक्रम चन्द फिर गद्दी मजि आया ॥
हरि चन्द बाद फिर हया विक्रम चन्द ।
गद्दी मजि बैठो फिर कर राज धन्द ॥
योक जमान कौ एक ताम पत्र मिल ।
उमजि लेखीया तब यस लेख मिल ॥

बिक्रम चन्दै लै जिता बड़ै २ रजा ।
दादा ज्ञान चन्द का जो करि छीया काजा ।।
बागेश्वरा लकि वीलै सुरक्षित धरौ ।
भौत करा काम यसै बड़ौ नाम धरौ ।।
ज्ञान चन्दा समय जो प्रजा छी नाराज ।
वीकौ नाती विंक्रमौ लै करा काम काज ।।
बहौतै जागीर दीया बामणौ कैं दान ।
ब्रह्म भोज करवाया भौत प्रतिस्ठान ।।
मन्दिर लै धर्मशाला नौ हौवा बावड़ी ।
दान दी वामणौ कणी जगा बड़ि बड़ि ।।
चौद सौ चौबीस में जो भल गांव छीया ।
कुलो मणि पान्डे ज्यू कै दान मजि दिया ।।
विक्रमैं लै पैली पैली भला काम कया ।
भोग बिलासौ में फिर अशिक है गया ।।
वीकै भतीजै लै तब खस रगो कणि ।
आपू में मिलाय फिर लड़ौ रजै हणि ।।
खसौ कौ सरदार एक शौड़ करायत ।
बड़ौ भारी परतापी छीय उबखत ।।
बिक्रम रजै कैं वीलै मारी बै भजाय ।
भला सौगौ तब बीलै जागीर में पाय ।।
विक्रम रजैलैं पौंलि वीक एक च्यलौं ।
दिबाल मैं चिणी बटी पैली मारि हलौ ।।

तब विलै कुमायौं कैं आपू में मिलाय ।
राजा बिक्रम चन्द कणि मारि बै मजाय ॥
चौद वर्ष राज करि देह त्यागी गोय ।
भतिजों भारती बीकौ रजा हैई गोय ॥
भारतीय चन्द हांति भल छीय कनी ।
सुचरित्र लोक प्रिय नृपति बतानी ॥
वीलैं शौड़ करैतै कैं कैद करै दिये ।
भावर तरायी मजि उबखत छीयो ॥
डोटी का जो रैक रजा वीक खानदान ।
काली कुमौ छीया तब रजा श्रीमान ॥
काली तीर भारती लै डेरा डाली दिया ।
बार वर्ष सेना तब उति जमैं दिया ॥
लूट पाट करि तबा भारी संगराम ।
वीको च्यलौ हय जै कौ रतनचन्द नाम ॥
बाबू की मदद हणि सेना उ लिगोय ।
डोटि कौ महराज तब खेत छोड़ी गोय ॥
सांथैं सांथ और सब राजलै दबाया ।
चन्द रजा सब भांति स्वतन्त्र है गया ॥
डोटि कौ रजौ कौ फिर छत्र उठि गोय ।
सोर सीर राज सब इनरै है गोय ॥
चौद सौ पचास मजि भारतीय रजा ।
रतन चन्द कणि तब दिदिया सुराजा ॥

चौद सौ इकसठ मजि स्वरग सिधाया ।
तेर वर्ष कुमांऊ में राज करि गया ।।
रत्न चन्द रजा हया बड़ा भाग्य शाली ।
इनुलै सुराज कय सब जीती हाली ।।
बागेश्वरा मन्दिर में कराय भन्डारा ।
पूजा पाठ करि उति भलि परकारा ।।
धर्मशाला बनाया बा भौत शानदार ।
पूजाका भोगाका लिजी गौं दिया द्वीचार ।।
उबखत कुमांऊ का रजौ कौ प्रभाव ।
भौत बड़ि गोछी तब चन्दो का जमाव ।।
चम्पावत मजि लकि कर फिर राज ।
मित्र बनै लिया सब रोहिला महराजे ।।
डोटी की लड़ै में फिर मदद करीछा ।
यरजैलै और एक साख धरि दिछा ।।
आपण राजम सब लगां छीया गस्त ।
चलाय रजैलै तब नयी बन्दोबस्त ।।
डोटी का रजों हैं फिर करि दी लड़ायीं ।
राणिका लै रैंका लकि आधीन बनायी ।।
नागा मल्ल शाही छीया शाही खानदान ।
चन्दों का आधीन तब है गया तमान ।।
रतन चन्द कणि फिर हौसला है गोय ।
जुमला बजांग थल प्रभृति गोय ।।

जगननाथ मठ लकि खंड क महर।
सुरज मरह लकि करि दिया सर॥
यों तीनो लै मिली बटी सन्धि सुलै करि।
कुमांऊ का रजै कणि कर दिणैं ठरि॥
यों तीनों रजौलै तब चन्द रजौ कणि।
अन्त तक कर दिया तब चिंतामणि॥
अठारौ सदी में तब यों छोटा नरेश।
बिसत्रित नैपाल दगै करि लीयो मेश॥
तभणि बै कर दिणैं बन्द करि दिया।
अधिला इनरौ नाम यसौ यसौ छीया॥
उत्तमसिंह रगुनाथ शिबराजसिंह।
इनदर रतन सिंह महेन्द्र सिंह॥
अठारा सौ पचासम गजेन्दर सिंह।
बजांगा का रजा छीया गजराज सिंह॥

सूचना

कुमाऊनी साहित्य सदन में एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता जो कि दिल्ली में तमाम बुक्सेलरों को कुमाउंनी किताबों की सेल करे तथा आर्डर लावे। उसको उचित कमीशन मिलेगा। इसके अलावा वही व्यक्ति कुमाऊनी साहित्य मण्डल का प्रचारक भी बनाया जाएगा जो कि सदस्यों से मण्डल का वार्षिक चन्दा भी वसूल करेगा उसमें भी उसको पारिश्रमिक मिलेगा।

जानकारी के लिए सम्पर्क स्थापित करें:—

कुमाऊनी साहित्य सदन

चौरासी घण्टा बाजार सीताराम देहली-६

कुमाऊँ के सम्राट

चौथा भाग दूसरा खण्ड

बम राजाओं की नामावली

सोरा का छी बम राजा यों इनारा नाम ।
यो के शाख नि मिलनी क्य इनरौ काम ॥
कराकिल काकिल लै औ चनरी बम ।
अंकी ज्ञानी शक्ति बम हरि विजय बम ॥
बम रजौ राजम जो जैदां छी किराला ।
वीक छा कहानी एक सुणि लियो हाल ॥
पट्टी वीकी बल्दीया छी कीरी वीकौ ग्राम ।
वील करौ उबखत बन्दो वस्तौ काम ॥
छिपाईया जिमि वीलै लोगों हांति पाई ।
नयी नाप चलै बटि रकम बढ़ाई ॥
बढ़ि गे रकम जब लोग गुस्सा हया ।
जैंदा कणि मारणै की सला कण रया ॥
जैदा जब गोय कथैं और गोनों मजि ।
उनुलै विद्रोह करौ पैंस दिण मजि ॥

उनुलै परपंच रच उकैं मार हणि ।
यौ झुठि खवर सुणै वीकी सैणी कणि ॥
जैदा मारी गीछ कय लड़ाई में आज ।
रुण बिलाणौं लै आब क्ये निहनौ काज ॥
आब तु धरण चैंछै जो आपणी पती ।
वीका बही रजिस्टर लिबै हैजा सती ॥
तब त्यरौ धरम लै इज्जत रैजाली ।
जैदा की आतमा कैंलै शान्ति मिली जाली ॥
उनिलै पै उसै कय सती हैयी गयो ।
कागजाद रजिस्टर सब निन्है गेयी ॥
यौ प्रपंच मजि लोग सफल है गया ।
सैंणी लकि कागजाद सब जलि गया ॥
यो खबर सुणि जैंदा वलहीन हय ।
शोक में विकल हैवैं तब मरि गय ॥
तदिन बैं यो मिसाल मसूर है गोय ।
आधिला का लैनौ मजि यस लिखि रय ॥

मरि गोय जैदा हाँ जलाई गई बै ।
जसी जसी सोर्याव कूनी तसी तसी भै ॥

रतन चन्दा राज में यो सब कुछ हय ।
सत्ताईस साल बीक राज काज कय ॥
चौदा सौ अठासी मजि स्वरग सिधाय ।
उबखतै कीर्ति चन्द गद्दी मजि आय ॥

यो रजैलै भौत जग विजय करीछा ।
पूर्वजों की यस कीर्ति उज्जवल करीछा ॥
डोटी का रजै लै जब करि दी चढ़ाई ।
कालीका किनरा परी फौज दी जमाई ॥
कुमाऊ में छायी गया मारण मै गया ।
राजदूत रजा का यो खबर न्ये गया ॥
कीर्ति चन्द खेलण छी तहैंत चौपड़ा ।
सुणि बै खबर तब उठि गया टाड़ा ॥
द्यख जब डोटयालों कौ भारि लसकर ।
घबराया रजा तब कांपा थर थर ॥
उबखतै ईश्वरै की ऐसी हैगे दया ।
नागनाथ सिद्ध एक योगेश्वर आया ॥
चम्पावत राज बुगा मजि करौ डेरा ।
रजै कणी मिलि तब उनरी खबरा ॥
कीर्ति चन्द दौड़ि वै उनरी पास गया ।
भेट पुजा करि बटि वृतान्त बताया ॥
सुणि बै फकीर तब दया में ऐ गया ।
यस कयौ लणै मजि तुम झन जया ॥
झोलि में बै तब एक चाबुक निकाबौ ।
रजा हांति कय तब यकणि लिजावौ ॥
यो चाबुक दिया कयौ सेनापति कणी ।
येलै ऊ भजाई द्यल दुश्मण कणि ॥

सेनापति गोय तब चाबुक लीबेर।
भजै दी डोटयाव जसा तितरा बटेर॥
कीर्ति चन्द रज तब विजयी है गोयो।
यस कीर्ति बढ़ाई लै बहौतै पै गयो॥
नाग नाथ बाबा लकि पुजित है गया।
रजा का यौ दरबारी सलाकार रया॥
आजी लै वां मन्दिर छा किला का सामाणी।
नाग नाथै पुजै हैछा उति चिन्तामणी॥
डोटि बै विजय पै वै नागनाथ ज्यूलै।
और सल्हा करं हणि रजा लिया बुलै॥
यस कय ऐल आब समय छा भलौ।
मुहूर्त लै भल एरौ सगुन रहौलौ॥
पच्छी मै तरफ हणि विजय रहली।
निर्भय है बटि लड़ौ जय जय हली॥
गढ़वाल तक तुम विस्तार फैलावो।
चौतरफा बटि तुम निर्भया है जावो॥
नागनाथै और एक दूसरी कहानी।
इतिहास कार लोग प्रसिद्ध बतानी॥
सिद्ध योगेश्वरा छी जौ कनफड़ा जोगी।
कीर्ति चन्द कणि बीलै बनाय सुयोगी॥
बीले कय मैं बजौला ऊर्ध्व मूखी नाद।
जाति लकि बीकी जालि आवाज लै धाद॥

उति तक हैई जालौ ह्यो तुमरो राज ।
सजै बटि लण हणि फौज भेजौ आज ।
तब जै सजाय वीलै लणयी कौ साज ।
जोगी लैं बजाय नाद पड़ि गे अवाज ॥
लड़ण लैगयीं तब फौजी अफसर ।
जीति गे रजै की फौज उति करौ सर ॥
चौमेसि सालम जीतौ फिर फल्टा कोट ।
कोटिली छकता जीतौं और उच्चाकोट ॥
उति बे धणियां कोट व बारा मण्डल ।
पालि पछौ जित फिर इलाका असला ॥
गढ़वालौ रजा लकिमारि बै मजाय ।
नादौ कौ शबद सुणि नजिक निआय ॥
कवे रजा निजित सकौ कीति चन्द्र कणि ।
जोगी कौ प्रभाव यसौ पड़ौ चिन्तामणि ॥
गढ़वालौ रजा फिर वापिस बुलायौ ।
विकराज उकैं दिबै कर पै ठरायौ ॥
कत्यरौ कौ राज छी जो मान्डलिक राजा ।
विसौवा खगमर कोट करं छीया राजा ॥
अल्मोड़ा पहाड़ मूण नदी जो सवाल ।
उति एक मन्दिर छी प्राचीन काल ॥
कत्यूरौ कौ राज जीतौ व वारा मण्डल ।
स्यूनरा लै जीती लिओ इलाका असला ॥

स्यूनरा वै रजा फिर बौरैरौ में भाजा ।
कत्यूरी रजौ लै साज लड़ायी कौ राजा ॥
कीर्ति चन्दै सेना वीले सब डाली मारी ।
तब कीर्ति चन्द कणी गुस आयो भारी ॥
वीलै पैजै मचाई दी सारी मार काट ।
कल्ले आम मचैं दियो करौ वारा वाट ॥
कैड़ैरौ बौरैरौ कणि बनायो आधीन ।
गगास कोशिका बीच प्राचीन नवीन ॥
आपणा मेला का पैजो कैड़ा वौरा छीया ।
उनुकै सयाण चारी पछील दिदिया ॥
कैड़ैरौ बौरैरौ कणी आवाद कराय ।
मथवै आपणौ तब शासन चलाय ॥
पाली हणी वील जब लसकर चलायो ।
उति का रजौ लै तब मसौदा बनायो ॥
हम लड़ि निसकना कीर्ति चन्द हणि ।
भल छा यो सन्धि कौला हम चिन्तामणी ॥
उनुलै लखन पुर किल में बुलायो ।
मेल जोल करि बटि भलि समझायो ॥
यस कयौ प्रजा कणी सन्तुष्ट धरिया ।
पाली पछौ कणि तुम आपणै ठारिया ॥
कीर्ति चन्द मानि गया उनरा बयान ।
उनु कणि बनै दिय सयाण पधान ॥

सन्ट लै मानिला मजि सयणा थोकदार ।
चौकोट गीबाड़ मजि भारी जिमीदार ॥
पालि बटि गोय फिर फल्द कोट हणि ।
खाती रजा रहौं छीया उति चिन्तामणी ॥
देश मजि हाती कनी पहाड़ में खाती ।
भारी बलवान हया योयी द्वीय जाती ॥
फल्दा कोट मजि तब लड़ाई है भारी ।
परजा लड़नैं रहै रजा गोय मारी ॥
करी दिय तब उति सारै कल्ले आम ।
मारी गेयी उति लकि परजा तमाम ॥
कीर्ति चन्द रजै लौ यां आपण हिपाई ।
महैरा लैकरा यत ठेला जाति माई ॥
फल्दा कोट परगना में उनकैं वसाया ।
सयणा जागीर दार उनकैं वनाय ॥
वन्दोबस्त करि बटि औफिसर धरा ।
कोटा लै ककोली फिर करि लयो सरा ॥
ध्यानी रौका बटा फिर आय चम्पावत ।
देश लै भावर हणि गोय तबस्त ॥
जसपुरा पास फिर चौकी बनै लिया ।
कीर्ति पुर उजगौ कौ नाम धरि दिया ॥
आजि लै उ कीर्ति पुर नाम छौ विख्यात ।
कीर्ति चन्द रजै लै पै बनै जग थात ॥

उवखन कुकाऊँ में कीर्ति चन्दौ राज ।
चौथा हिस्सौ छोड़ी बटि सारे में स्वराज ।।
कत्यूर लै दान पुर अस्को सीरा ।
सोर तक हया तब कत्यूर आखीरा ।।
गढ़वाल लकि बीलै फते कण चाय ।
नागनाथ फकीरै लै वर्जी बै बचाय ।।
देघाट बै उथां फिर छोड़ि दी गढ़वाल ।
बाकी सब करि दिय आपण हवाल ।।
भागीरती तट तक य रजौ कौ राज ।
चन्दों मजि हया यौंई ठुला महाराज ।।
पन्द्र वर्ष बड़ भल राज करि गोय ।
पन्दरा सौ तीन मजि वैकुन्ठ न्है गोय ।।
फिर हय परताप चन्द महाराज ।
बाबु कौ जितिया मजि करौ वीलै राज ।।
आपण स्वराज मजि कर छीया दौर ।
नयी काम य रजैलै कवे निकया और ।।
पन्दरा सौ सत्तर में स्वरग सिधाय ।
वीक बाद ताराचन्द गद्दी मजि आय ।।
चौद वर्ष तक यलै स्वराज चलाय ।
पन्दरा सौ कौ वां दान पाल पाय ।।
तारा चन्दौ समय कौ कुछ नै मालम ।
स्वरग न्है गोय तव सोलवां सालम ।।

फिर पै मानिक चन्द गद्दी मजि आय ।
नौ बरस राज करौ स्वरग सिधाय ॥
वीक जमानम एक यसी बात हैगे ।
कुमाऊ रजौ की जैलै भारी साख रैगे ॥
खवास खां हय एक रज मुसलमान ।
दिल्लिपति कणि दिखै लणणै की शान ॥
हारि गोय जब तब भाजि वै न्है गोय ।
कुमाऊ रजा का तब शरण ऐ गोय ॥
दिल्ली का रजै लैं तब पत्र भेजि दीयो ।
खवास खां कणि तुम क्यलै धारिलियो ॥
यस कय छाड़ि दियो खवास खां कणि ।
नतर उजाड़ि जाल ह्य कुमाऊ कणि ॥
रजैलै उत्तर दिय तब चिन्तामणि ।
हम छोड़ि निसकना खवास खां कणि ॥
हम छोड़ि निसकन जो शरण आछ ।
य हमरी राजनीति धरम बतांछा ॥
अठकिसन लिखि गयी य तारीफ कणी ।
चन्द रजौ बहादुरी सबुका सामणी ॥
अब्दुल्ला खां मुसलमान इतिहास कार ।
तारीख लिखीछ वीलै करौछा प्रचार ॥
कुर्माचली चन्द रजौ य उज्जवल नाम ।
पर्वती लोगों कौछा य मजि सर नाम ॥

फिर पै कल्याण चन्द गद्दी मजि आय ।
चन्दों मजि यो रजै कैं खराव बताय ॥
यस कनी येलै कौय भौत अत्याचार ।
यका राज मजि प्रजा भौत छी लाचार ॥
पन्दरा सौ पचपन मजि परलोक गय ।
जो आय दुनिया मजि येती क्वे निरय ॥
अन्याई लै न्याय कणी सब नहै जानी ।
सुयस अपयस कणि इतिहास गानी ॥

दोहा—आया हैं सो जाएगा, क्या राजा क्या रंक ।
यस बाकी रह जाता है, बाकी रहे कलंक ॥

पन्दरा सौ इकावना पूरन चन्द आया ।
चार वर्ष वाद यलै स्वरग सिधाय ॥
पन्दरा सौ पछपन में राजा भीसम चन्द ।
गद्दी मजि वैठौ फिर बहौंतै आनन्द ॥
यलै रजा स्वभावो कौ क्ये भल निछिय ।
आपणी सन्तान विकी च्यलौ क्वे निछीय ॥
तारा चन्दौ च्यल एक कल्याण चन्द हय ।
उकणि य गोद ल्याय तब राज कय ॥
मां बापों लै प्यार मजि वालो वालो कय ।
वालौ कल्याण चन्द फिर रजौ नौ हय ॥
डोटि बटि उबखत षड़यन्त्र हय ।
कल्याण चन्द फौज लिवै उति भेजी गय ॥

पालि और स्यूनरा बै लकि लणौं आई।
रजै लै आपणी फौज उति हैं चलाई॥
एक दफे भीषम चन्द य विचार कय।
चम्पावत राजधानी कुण में है गोय॥
खगमरा कोट मजि किलाछी पुराण।
यकणि बनौल कथ राजौ कौ ठिकाण॥
लोगों लै उनीति कणि बिगाड़ौ चहाय।
और परपंच एक उनुलै रचाय॥
खस रजौ मजि एक सरदार छीय।
कीर्ति चन्दै लणौ मजि छिपि जो गोछिया॥
गागरा नजिक एक रामगढ़ा पास।
गजुवा ढिंगा नाम एक जग हैई खास॥
खसौ कौ उ सरदार उति लुकि गोय।
आपण मनैलै आफी रज बनि गोय॥
आपू कणि ठारौछी यो स्वतन्त्र नृपति।
सेना कणि ल्याय उलै गजु ढिंगा बति॥
खगमरा कोट पर करि दी चढ़ाई।
घमासान उति तव है गई लड़ाई॥
भिकम चन्दौ कौ विलौ यस करि दिय।
अस्वथामा पाण्डवौ कौ जस करौछिय॥
सेईया भीषम चन्दौ सिर काटि दिय।
और लै साथियों कणि तसै मारि दिय॥

कुमाऊं कौ रजा वीलै आपू कैं बनाय ।
य खबर सुणि बटि कल्याण चन्द आय ॥
डोटयावों दगड़ी बीलै करौ राजी नाम ।
दो तरफा सेना तब जोड़ि लो तमाम ॥
खगमरा कोट और रामगढ़ पारी ।
करि दी चढ़ाई तब फौज वड़ी भारी ॥
आपण बाबू कौ वील बदलौ ली लोय ।
वीका सब साथियों कैं कतल कै दिय ॥
गजुवा ढींगा का वीलै सब मारी दिय ।
वीकौ नाम प्रसिद्ध छा आजि लकि छिय ॥
कल्याण चन्दै की तब विजय है गेयी ।
य घटना पन्दरा सौ साट मजि हयी ॥

नवीन प्रकाशन

कुमाऊनी साहित्य मण्डल द्वारा नये लेखकों की अतिशीघ्र प्रकाशित होने वाली नई रचनाएं पुराने प्रकाशनों के नये संस्करण: जिनकी अधिक मागें

पुराने प्रकाशनों के नये संस्करण:—

१. नन्द भाभी २. माँ बेटी ३. दीदी भुली ४. शैलानी
५. दीवानी विनोद दो ब्यानों के हाल ६. सासु-ब्वारी तीसरा संस्कृण

वचे लेखकों की नई रचनाएं:—

१. कुमाऊनी रामायण २. श्रवण कुमार ३. सत्यवादी हरीशचन्द्र
४. सावित्री सत्यवान ५. भस्मासुर बध ६. हरिद्वार महात्तम्य
७. समरुसिंह हरुसिंह हीत ८. सत्यनारायण व्रत कथा
९. गोरिया राजा खण्ड काव्य १० शिव चालीसा ११ साल्दे सोमनाथ

हर प्रकार की पुस्तकें मंगाने का एकमात्र स्थान:—

कुमाउंनी साहित्य सदन बाजार सीताराम दिल्ली-६

कुमाऊँ के सम्राट

तीसरा खण्ड

चौथा भाग

बालो कल्याण चन्द

पनदरा सौ साठ मजि बालो कल्याणचन्द ।
गद्दी मजि बैठा फिर बहौतै आनन्द ॥
चौतरफा शान्ति करी कर राज काज ।
बावु कौ वदल लिवै सब सुख साज ॥
खसीया खोला में तब नगर बसायो ।
देवतों की पूजा हणि भिल्मोड़ा मगायो ॥
उतिकौ नौ धरौ फिर आलम नगर ।
नयी राजधानी तब बसायो शहर ॥
रमणीक शुद्ध जल आब हवा भलो ।
देवदारू जंगला छा जगा भौत भली ॥
देवली व ब्याड़ि खान सटोलिया खान ।
चीमा खान बीच उति सुन्दर उ स्थान ॥
भिल्मोड़ा ल्याडि लै वां भौत हई गया ।
भिल्मोड़ा हांति क्वे २ अल्मोड़ा कै गया ॥
कैलै कय भिल्मोड़ा कैलै अलमोड़ा ।
कैल कय चलमोड़ा कैल अलमोड़ा ॥

उनथें सबुलै तब अल्मोड़ी कय ।
तभणि बै उति कौ नौ अल्मोड़ा हय ॥
आलम नगर नाम कैलै निकै जाण ।
अल्मोड़ा हयी गोय सबुलै पच्याण ॥
बालोकल्याण चन्द राजा बीलैं यों बसाय ।
पन्दरासौ तिरपन में नयी नाम आय ॥
सेला खोला भीजाड़ा का जोशी खानदान ।
काली कुमू वटि छीजो मंत्री व दिवान ॥
रजा का दगड़ा तब उलै उति आया ।
चौथानी व डढ़या विष्ट पाण्डे उति रया ॥
महैरा फर्त्यालौ कणि फिर बा वसाय ।
चौघानी लै पान्डेनौ कैं फिर वां बुलाय ॥
पाली पछौं फदा कोट वारहामन्डल ।
द्वी धड़ौ में वांटि दिया असल-असल ॥
कत्यूरीया राजाओं की सनतान कणि ।
सयणा लै थोक दारी सौपि चिन्तामणि ॥
अल्मोड़ा में चन्द रजों राजधानी वनी ।
उवकतैं गंगोली में लड़ायी गे ठनी ॥
गंगोली का रजा लकि चन्द वंशी हया ।
चन्दै में बे उयीं रजा मड़कोटी हया ॥
इनरा पुर्वज राजा कर्म चन्द हया ।
इनरा दीवान मंत्री उप्रेती हया ॥

मंत्री का दगड़ा कुछ झगड़ौ है गोय ।
शीकार खेलण रजा जंगल हैं गोय ।।
घ्वक दिबै मंत्री लै वां रजा मारि दीय ।
बागै लै मारीछ रजा प्रचार कै दिय ।।
रजै की राणि लै तब सराप दि दिय ।
पन्त बामणौ कै तब च्यल सौपि दिय ।।
यस कय म्यरौ पति बागै लै नी खाय ।
यो प्रचार गलत यां लोगों लै कराय ।।
आज बै यां सबों कणि बाग खानै रैजो ।
आज बै यो जगा भूमि बंजर रहैजो ।।
यस कैबैं राणि तब सरगू में न्हैगे ।
रजै की पगड़ि लीबे आपू सती हैगे ।।
तभंणी बै गंगोली में बाग भौत रनी ।
यसकनी बाग उति मैंसौ कैं मारनी ।।
पन्तों लैं व सतीयों लैं बचन निभाय ।
कर्मचन्दा च्यलै कणि गद्दी में बैठाय ।।
ताराचन्द रजा जब गद्दी मजि आय ।
पन्तों कणि राजबैद्य गुरु जी बनाय ।।
मंत्रि लै दिवान लकि सेनापति लकि ।
पन्तों कणि वनायो पै सलाकार लकि ।।
मड़कोटी रजौ मजि भौत रजा हया ।
आठ नाम याद छैं जो यों यों रजा हया ।।

मड़कोटी राजाओं के नाम

राजा कर्मचन्द और शीतचन्द हया।
ब्रह्मा हिला चन्द व पुनम चन्द हया॥
राजाअनी चन्द राजा नारायण चन्द।
नारायण चन्दै लै पै करौ अना धुन्द॥
कल्याण चन्दैं लै तब दाव पेच पाय।
जीती बै गंगोली तब आपू में मिलाय॥
सोर सीरा अस्कोट दानपुर जोहार।
जीती बै रजै लै उति बसाया सरदार॥
छोटा २ खस राजा हया सरदार।
रौतेला दीवान सब कया जिमीदार॥
इनुलै चन्दौ कौ फिर प्रभाव बढ़ाय।
तुफानी शासन तब चन्दौ लै बढ़ाय॥
अल्मोड़ा मजि तब हैई राजधानी।
यों बालो कल्याण चन्द रजा छीया ज्ञानी॥
पन्द्रा सौ अड़सट तक यतु काम हया।
बालो कल्याण चन्द तब स्वरग न्है गया॥
उनरा सुपुत्र फिर रुद्र चन्द हया।
पन्दरा सौ अड़सट गद्दी मजि आया॥
दैहैलै खबर तब दिल्ली बटी आई।
दिल्ली का सुबालै आब छिनी है तराई॥

बालेश्वर मन्दिरों कौ एक जो पुज्यारी।
रामदत्त नाम जैको नीमर्बत धारी ॥
उलकि खबर ल्याय तब तै बखत।
महादेव दबी रयी येती ये बखत ॥
उनू कणि निकालौ कबे तब थिति रली।
चन्द राजाओं की तब राज वृद्धि हली ॥
उबखत रुद्र चन्द चम्पावत गया।
महादेव निकाली बै थापित कराया ॥
मन्दिर मर्मत करि ठीक दी वनायी।
रामदत्त कणि दिबै फसल की नायी ॥
भाबर का लड़ै का जो समाचार आया।
रुद्र चन्द दौड़ा तब उति हणि गया ॥
रुद्र चन्द रजौ की छा जति २ आई।
उति २ रामदत्त पुज्यारी की नाई ॥
हुस्सैन खां टुकड़िया एक जो नवाब।
साजहां पुरी कौ हयौ जालिम असाब ॥
हिन्दू की पछयाण बीलै टुकुड़ी लगायी।
टुकु ड़िया नाम वीलै तब दी धरायी ॥
बीलै कभैं इतिहास पढ़िया निहयो।
पहाड़ों में सुन चांदी भौत हौंछा क्यो ।'
आपण मनम भीलै लायो अनुमान।
कुमांऊ का लोग हैला खूब धनवान ॥

तब वीलै पहाड़ों मैं लूट सुरु करि।
बहौतै मन्दिर तोड़ि चौपट दी करि॥
चौमासम एक फौज फसिगे वां तब।
कीचड़ लै जगंल में झील झाड़ि सब॥
पहाड़ाका उचा उचा पहाड़ों में चड़ा।
घुर्ये बटि गोव वां सबौं ख्वरा फोड़ा॥
फिर उ पहाड़ बटि तब भाजि गोय।
करि बै तय्यारी फिर दुबारा ऐ गोय॥
महल मन्दिर फिर भौत टोड़ी गोय।
लूट पाट करि बटि धन निन्है गोय॥
उवखतै दिल्ली मजि रज छी अकबर।
बीरबल दीवान छी भल छी असर॥
अकबर बाशालै तब हुस्सैन खां कणी।
दिल्ली में बुलाइ लिए तब चिन्तामणि॥
पहाड़ कागोबौ लै जो घायल है गोय।
दिल्ली जै बै टुकुड़ि जातै मरि गोय॥
रद्र चन्द रज तब भावर में आयो।
मुसलमानों कणि वां बै मारि बै भजायो॥
यखबर आजि जब दिल्ली नहै गेई।
नबाबै की फौज फिर तैयार है गेई॥
भौत बड़ी फौज लिबै भाबर में आयो।
राजा रुद्र चन्द तब भौतै घबरायो॥

रजै की जो फौज वीकी निहई चौथाई ।
राजा सद्री चन्द कणि बुद्धि भौत हई ॥
नबाबै दगड़ी येसी ठराई तजवीज ।
यस कय नबाब ज्यू सुणै एक चीज ॥
दो तरफा फौंज कणि अलग कैरौला ।
सेनापति सेनापति हम लड़ि जौला ॥
जो जीतिलौ वीक नाम भाबर है जालौ ।
हारलौ जो उ अपण घर नहै जालौ ॥
मुगलों कौ सेनापति एक वीर हयो ।
रुद्र चन्द खुद आफी सेनापति हयो ॥
जीती गया तब जसी राज रुद्र चन्द ।
फैसला मन्जुर हय युद्ध हय बन्द ॥
बादशा लैं जब सुणि एतिको खबर ।
राजा रुद्रचन्द कणि बुलाय तत्पर ॥
नागौरा का युद्ध मजि भेजौ लण हणि ।
सेनापति वनाय बां रुद्र चन्द कणि ॥
रुद्र चन्द रजै की जो कुमांऊनी फौज ।
उनुलै वां युद्ध मजि खूब करि रौज ॥
देखि वै उनरी तब बहादुरी कणि ।
चौरासी को माल तब दि दी रजै कणि ॥
भावर में भौत वार लूट पाट हैई ।
कई उपद्रव हया लणायीं लै हैई ॥

रुद्र चन्द रजैलै पै इंजाम कराय ।
रुद्रपुर नगर वां आपणौ बसाय ॥
महल मन्दिर लै वां किला लै बनाया ।
जगु जगु लाट और शासक बनाय ॥
उबखत तराई में खूब छी अमन ।
आबादी लै भौत छीया खूब अन धन ॥
दिल्ली और तराई कौ काम करि बेर ।
अल्मोड़ा अणै कि तब हैयी गे अबेर ॥
रातौ रात अणैरछी उति बै घोड़म ।
टूटी गे लगाम तब उति बै अणम ॥
ज्योड़ जसौ स्याप देखौ ज्योड़ ठारी बटि ।
बनैली लगाम तब गया खटा खटि ॥
राति हंणि देखौ जब घर जायी बेरा ।
सगुन बनाय तब खुशी हैई बेरा ॥
सइमै कैं रजै लै पै खूब दी इनाम ।
फसलैं की नायी लकि दिलै वीका नाम ॥
दिल्ली बै ऐबेर तब अल्मोड़ा मजि ।
किला लै महल तब बनाया वां सजि ॥
बाबू का महौला वीलै मन्दिर बनाया ।
बामणौ का लिजीयां वां नियम बनाया ॥
रसोइया राज गुरु राज वैद्य पद ।
नयी नयी पदवी लैं बनायी बेहद ॥

रुद्री चन्द रजा का जो द्वीया पुत्र छीया ।
ठुल च्यल शक्ति सिंह जन्मान्ध छीया ।।
छोट्टौ जो लक्ष्मी चन्द शक्तिवान छीयो ।
भौत बड़ौ शक्ति शाली परतापी छीयो ।।
सीरा राज्य लीणें की जो बाबू की लगना ।
लक्ष्मी चन्द पुरी करि लगै तन मना ।।
सीरा कोट भौत ठुल राजकोट छीयो ।
सबुमजि सबसीर उपजाऊ छीयो ।।
सीरा का रजों का ऐति कुछ नाम आनी ।
उनुकणि डोटि वाला राजंशी बतानी ।।

डोटी के राजाओं की नामावली

आधिरौत भीम रौत भक्ति रौत हया ।
धीर मल रुद्र मल जय मल हया ।।
रितुमल भूपति लै भारतीय मल ।
दाता व आनन्द मल और राजमल ।।
कल्याण जुवानमल अरजुन मल ।
नागमल और बलि नारायण मल ।।
डूगरा बसेड़ा और मदन बसेड़ा ।
मदन बसेड़ा छीया यतुक बसेड़ा ।।
सोभामल हर्रीमल यतु राजा हया ।
नारायण बलि एक खसों लै हराया ।।

सोभा मल रजै लैं पै खस राजा कणि ।
मारि बै भजाय दिय तब चिन्ता मणि ॥
हरिमला समया पै रुद्रचन्द हया ।
एक भारि फौज लिबै सीरा मजि गया ॥
रैक रजै दगड़ि ऊ लणण भै गया ।
रुद्रचन्द लणायी मैं उति हारि गया ॥
हारि वटि रुद्र चन्द वापिस जो आया ।
बट मजि एक जगा स्योव भैंटी गया ॥
बट में बडुवा एक बुणणौ छी जाला ।
टुटी टुटि जांछीया उ है गोय विहाला ॥
सातों बार बनाणम जाल बनि गोय ।
वीक काम कणि तब रज देखि रय ॥
रजै कणि आयी तब यो चीजै की फाम ।
हिम्मत निहार जब बनि जाछा काम ॥
सोचनै सोचनै रजा अल्मोड़ा आयो ।
दिवान मसौद्यों सांथ मसौदा ठरायो ॥
मसौदी लै कय तब सुणौ महाराज ।
गुप्तचर खोजों कोई तब हलौ काज ॥
उनदिनों एक छिया पुरुषोत्तम पन्त ।
रैक रजा मंत्री छिया बुद्धि छि अनन्त ॥
लगै बटि सोध भेद रजैलै उ खोजौ ।
वीहणि रजै लै तब राज पत्र भेजौ ॥

विहांति रजैलै कय राज कर ल्यावो ।
एक लाख रुपै तुम एति लीबै आवो ॥
निद्याला भलिक जब और ज्यादा ल्यूला ।
जतु धन त्यरि पास सब छिनी ल्यूला ॥
पुरुषोत्तम पन्त तब अल्मोड़ा आया ।
बहौतै बिनीत भाव बचन सुणाया ॥
रुपया तो कुछ निछै शिर्प योछासीरा ।
ज्य सेवा करौछा तुम सेवा छा हाजिरा ॥
यदि तुम जो चहांछा सेवा करि दीनू ।
सीरा लैं बधान कोट राजदीवै दीनू ॥
कुमाऊं में मिलै दिनू सीरा बधान कोट ।
हरिमल रैका कणि मरि दीनू चोट ॥
रुद्र चन्द रजैलै पै मानि ली यो बात ।
सीरा मजि फौज चढ़ै तब रातौ रात ॥
तीन दिन रहै उती लड़ै घमासान ।
हारि गया रुद्र चन्द हया परेसान ॥
तीन दफे लड़ै करि फिर हारि गया ।
चन्दों कणि रैका तब दूर भजै गया ॥
एक बाट रुद्र चन्द रजा नहै गया ।
एक बाट पुरुषोत्तम पन्त नहै गया ॥
पुरुषोत्तम पन्त तब भूख रैहै गया ।
जानै जानै एक गौ में बुढ़िया यां गया ॥

बुढ़ियेलै खीर खवै क्यवा का पातम ।
पुरुषोत्तमै बुद्धि तोलि जरा सा बातम ॥
वी लै तब खीर खै उ बीच मजि बटि ।
खीर बगि गेउ तब दन खनौ बटि ॥
बुढ़िएलै कय त्वीलै खीर नी खै जाणि ।
पुरुषत्तमै लै यसै सीरा नी ली जाणी ॥
तब कौंछा पुरुषोत्तम खीर कसी खाणी ।
सीरा में बिजय लकि फिर कसी पांणि ॥
तब जै बुढिया कैछा सुण मेरी बात ।
यतुक चाकव जोछी य क्यवौ कौ पाता ॥
दनखनौ बै जो पैली खीर तु यो खानै ।
सीरा कोटे बिजय तु तब जैसी पानै ॥
तब वीकी समझ में आई गे उ वात ।
आपु फिर लणं हणि गोय रातौ रात ॥
वीहै बै आधिल द्यखौ और उधारण ।
गोभरीया किड़ द्यखौ गोलि रौ बनाण ॥
बार बार लीजाणम फिर घूरी जैछा ।
पांछौ बार गोलि वीकी पार हैइ जैछा ॥
उकणि यो भल एक मिलि गो सबक ।
फिर वीलै लगणै कि लगाई जपक ॥
फिर लड़ा रुद्र चन्द और पुरुषोत्तम ।
घुसि पड़ा किला मजि करि दी खतम ॥

रैका राजा हरिमल भाजौ डोटी हणि ।
एसी है कहौत उति तब चिन्तामणि ।।
बाद मजि रुद्र चन्द इलाका तमाम ।
सीरा में बसाया सब चलि गेई हाम ।।
चौगरखा मनसारी बारह मन्डल ।
भैसौणा मलाण लकि मनसा अमल ।।
सब जगा धरि बटि आंपण शासक ।
जीमीदार बसै दिया और प्रसाशक ।।
हरि मलै सनतान डोटि का शासक ।
विद्य वान बतानी बां बड़ा छै शासक ।।
मल राजा जैबखत डोटि हणि गोय ।
कुटम परवार सबै दगड़ै लिगोय ।।
कैठैत व भट्ट जो छी यका कर्मचारी ।
कामदार बनि गया चन्दों का पैसारी ।।
सीरा कोट असकोट दारमा जोहार ।
सब जगा हैई गोय चन्दों कौ धिकार ।।
रुद्र चन्द रजा तब असकोट आया ।
मांडलिक रजा सब आधीन बनाय ।।
उनरा दगड़ा तब करि रिस्तेदारी ।
रजवार छीया तब राज्य अधिकारी ।।
युबराज छीया जो ऊँ लला कैन्हां छीया ।
और बिरादरौं हांती गुसायीं कछीया ।।

रुद्र चन्द रजा तब अल्मोड़ा आया।
पुरुषोत्तम पन्त कणि काम सौंपि आया॥
यस कय तुम यांकौ इनतजाम करावो।
करि बटि इंजाम अल्मोड़ा आओ॥
वीक बाद फिर तुम गढ़वाल जाओ।
जीति बै वधान गढ़ कुमांऊ में ल्याओ॥
रुद्र चन्द रजै लै पै अल्मोड़ा ऐबेर।
खुब काम करा तब राज बसै बेर॥
मन्दिरों कै चढ़ै दिया खुब गुठ गांऊ।
मन्दिर बनाय एक यां पालि पछांऊ॥
विनौ और राम गंगा वीच में उदार।
वीकानाम शिवालय छा बृद्ध केदार॥
पंण्डित विद्वानौ कणि गांव ग्वैला दिया।
होन हार छात्रों कणि छात्र बृति दीया॥
बहौतै युवकों कणि काशि पढ़ै गया।
अल्मोड़ा मजि लकि संस्कृत पढ़ाया॥
कुमांऊ का पण्डित लै विद्वान है गया।
काशी का पंन्डितौ हबै कम के निरया॥
ब्रह्मणौ का च्यला सब विद्वान है गया।
विद्वान शास्त्रार्थ कंण काशी बटि अया॥
कुमांऊ पण्डितों दगै सब हारि गया।
मानि बटि हार तब वापिस न्है गया॥

ल्छी चन्द रजा छिया खुद विदवान ।
बलवान गुणवान परम सुजान ॥
हु लै संस्कृत मजि गरन्थ बनायीं ।
चार वेद छयो शास्त्र अध्यन करायीं ॥
आव सुणों चिन्तामणि आधीलै कहानी ।
बद्रीदत्त पाण्डे ज्यू जो लिखी बै बतानी ॥
पुरुषोत्तम पन्त ज्यू लै राज आज्ञा पाई ।
जैबटि वधानगढ़ करि दी चढ़ाई ॥
गढ़वाल मजि छी जो राजा दुला साह ।
कत्यूरीया रजै हणि करि वै सलाह ॥
सुशुकालदेव राजा कत्यूरी आखीर ।
दुलासाह रजै की पै मानि तदवीर ॥
तुम करौ ऐल कय मदद हामरि ।
तब जै करुला फिर हमलै तुमरि ॥
कुमांऊ तुमरौ हलौ चन्दो हां लिवटि ।
येतियो हमरौ हलौ तब तहै बटि ॥
सुकाल देबै की जब मनिली यो बात ।
वीलै पै अपणी फिर जोड़ि दी जमात ॥
पुरुषोत्तम पन्त कणि जाण लै निदियो ।
सामाग्री रामेत वीको वाट रोकि दियो ॥
गढावों दगड़ा तब भारी युद्ध हय ।
पुरुषोत्तमै कणि उति भाला लागी गोय ॥

मरि गोय पन्त तब काटि दिय सिर ।
दुलासायी पास शिर निन्है गया फिर ।
वील पैली सेना हांती जसौ कैरौ छीयो ।
सबु कि मन की तब उसै करि दियो ।।
पुरुषत्तमौ कौ जो यां शिर काटि ल्यालौ ।
उ तब इनाम मजि जागीर यां पालौ ।।
पडयारों लै काटौ छीय पुरुषोतमौ शिर ।
उनुकैं जागीर वीलैं बांटि दिया फिर ।।
रुद्रचन्द कणि जब य खबर आई ।
पुरुषोत्तम पन्तै की वां करि है सफाई ।।
रजैलै वां सलहाकारों कणि लै बुलायो ।
सेनाकछी करि बटि बिगुल वजायो ।।
उ सव सुकाल कणि पकड़ि ली आया ।
और लै कत्यूरौ कणि बन्दि बनै ल्याया ।।
सबुकैं पकड़ि बटि अल्मोड़ा लि आया ।
उनरौ जो मित्र छो यो रातु बौरा आया ।।
वील कय छोड़ि दियो ऐल इनु कणि ।
जरवानौ ठरि गोय जब चिन्तामणि ।।
जरवानौ करि दियो द्युल तुमु कणि ।
छैम्हैणम द्यूला कय जरवानौं कणि ।।
छोड़ि दीयो तहैं तब मानिली सरत ।
छैम्हैण है गया जब ऐगोय बखत ।।

जा कौंछा ल्यावों आब जरवानो ल्यावो ।
यातु मरि रयीयत हमू में मिलावो ।।
रातुबौरा सुकाल लै पै पलटी गया ।
जर वानौ दिण हणि मना करि गया ।।
उनुलै जवाब दी दी हम के निदिना ।
ज्य करंछा आब तुम कैं लियो आधीना ।।
रुद्री चन्द गुस्स मजि तब उति गोय ।
रातु लै सुकाल कणि मरि वै एगोय ।।
जिति बै कत्यूरौ कणि अल्मोड़ा ल्यया ।
कत्यूरौ कौ राज लकि आपू में मिलाय ।।
उनतीस बरस करौ रुद्री चन्द राज ।
बहौतै प्रभाव शाली भल काम काज ।।
पंन्दरा सौ सात में यों सुर पुर गया ।
लक्ष्मी चन्द कणि तब गद्दी सौपी गया ।।
सबों हबै ठुला रजा चन्दों में यों हया ।
शूर वीर शिक्षा प्रेमी परतापी हया ।।
गुण वान ज्ञान वान हया विद वान ।
पन्डित लै विद्वानौ कौ करं छीया मान ।।
द्वनुलै आपणै राज बहौतै बढ़ायौ ।
भावर में रुद्र पुर इनूलै वसायौ ।।
रुद्र चन्द देवी का लै उपासक छीया ।
और सब देवतौ कैं खूब मान छीया ।।

कर्म वीर लकि छीया भक्त लै सेवक ।
शिव उपासक लकि कविलै लेखक ॥
इनरा सुराज मजि भला काम हया ।
इनरी सन्तान लकि इनू जसै हया ॥
रुद्री चन्दा बाद राजा ल क श मी चन्द ।
गद्दी मजि बैठा फिर करौ राज धन्द ॥
य रजैलै चढ़ाई कै गढ़वाल पारा ।
हारनै हारनै रया सात बार हारा ॥
सातों बार गढ़ बटि भाजि बै एगया ।
गढावों का घिड़ मजि लुकि बटि आया ॥
गुरुहांति कय तब ह्य तुमरों मंत्र ।
धरौ तुम आपु हँति निहांति के तंत्र ॥
सात बार हारी गोयू है गेछ सरम ।
हारिया भाजियों कौ के निरनों भरम ॥
आब ता में एति बटि दूर नहै जान् ।
राज काज छोड़ी द्यूनू जोगी हई जानू ॥
गुरु जी लै कय तब कुछ ठैरि जावो ।
मंत्र सिद्धि करूला में मत घबरावो ॥
गुरुजी बंगाल जै बै सिद्ध करौ मंत्र ।
मंत्र दियो रजै कणि करि बटि तंत्र ॥
मंत्र लिवै रजैलै पै और सिद्धि करि ।
और लैकि देवतों की सब सिद्धि करि ॥

अल्मोड़ा लै बागेश्वर मन्दिर बनाया ।
जागेश्वर कई गांव गूठ में चढ़ाया ॥
आठों बार लकि तब लण हंणि गया ।
बागेश्वर पूजा करि गढ़वाल गया ॥
बिजय ता तब लै के खास जै निहई ।
लूट पाट करि कुछ विजयै ठरयी ॥
यों रजैंलै ढयों मजि पुतलों जलायो ।
लकड़ा पीरूवा सब इकट्ठा करायो ॥
बनैबे आदिम जसौ लगै दियो आगौ ।
जसिक दुनियां कणी यो खबर लागौ ॥
जीती गोछा चन्द रजा हारि गो गढ़ाल ।
अल्मोड़ा जल्दी तब पूजी गो सवाल ॥
तभणी वै नना आब खतड़ुवा कनी ।
ढयों ढयों मजि आब भैलौ भैलौ कनी ॥
गैड़ा की जीता खतड़ुवा की हारा ।
गैड़ा बैठो स्योला खतड़ू पड़ो भ्योला ॥
गैड़ा हय सेनापति चन्द राजावों कौ ।
खतड़ुवा सेनापति हय गढ़ालौ कौ ॥
उभंणी वै खतड़ुवा त्यौहार है गोय ।
विजयों कौ वारपिक उत्सव है गोय ॥
लक्ष्मी चन्द भौत ठुला महा राज हुवा ।
जहांगीर रजाका यां सभा मजि हुवा ॥

जैलै इनरि भौत बड़ाई करीछा ।
और एलै भौत जगा गूठ मजि दीछा ॥
लक्ष्मी चन्द चौबी बर्ष राज करि गया ।
सौल सौ इकीश मजि स्वरग न्है गया ॥
बीकौ च्यलो दलीप चन्द गद्दी में बैठायो ॥
सोल सौ चौबीस मजि स्वरग सिधायो ।
वीका बाद बिनै चन्द गद्दी मजि आया ।
फिर राज त्रिमल चन्द महराज हया ॥
तेर वर्ष राज करि गया त्रिमल चन्द ।
त्रिमल चन्दा बाद हया बहादुर चन्द ॥
वीक बाद हया फिर राजा उद्योत चन्द ।
उनरा सुराज्य छीया प्रजा कै पसन्द ॥
उद्योत चन्दा राज में छी बाबा ऋद्ध गीरी ।
उनरी कहानी एक सुणि लिया फिर ॥
बाबा जी का उद्योत चन्दा बड़ा प्रेम छीया ।
रजै हांति प्यारैले ऊं उद्धवा कछीया ॥
एक दिन उद्योत चन्द ऋद्ध गिरी कंणि ।
दुशाला दिआया एक उति ओण हणि ॥
बाबा लै दुसाला दिया धूणि मजि डाली ।
नगड़ैं भै गया फिर उसी कै ऊं खाली ॥
दुसरी बखत जब रजा उति अया ।
दुसाला नि द्यख अब आश्चर्यम हया ॥

बाबाजी समझी गया रजा का दिलै की ।
यकणि फिकर हैगो अब दुशालै की ॥
बाबा जी लै धुणी मजि चीमटा डुबाय ।
दुसाला निकई बटि रजै हांति कयो ॥
यो लें रै उदुवा कयो ह्य तेरौ दुशाला ।
त्यकणि फिकर हैगे कतिगो दुशाला ॥
रजैलै पै माफी मांगी जोड़ी बेर हात ।
घर हणि नहै गया निकई कै बात ॥
बाबा लै दुसालों दीदि क्वे गरीबै कणि ।
आपू ऊं उसिकै हया रोज उति कणी ॥
उद्योत चन्द रजैलै यां एक कवि कणि ।
दस सौ रुपयां दीया हाथी बैठहणी ॥
उद्योत चन्द वीस बर्ष राज करि गया ।
सोलसौ अड़सट मजि बैकुण्ठ न्है गया ॥
फिर आया गद्दी मजि राजा ज्ञान चन्द ।
दस बर्ष राज काज करौ काम धन्द ॥
फिर पैजै गद्दी मजि जगत चन्द आया ।
वीक बाद चन्द राजा देवी चन्द हया ॥
फिर पै अजित चन्द गद्दी में मै गया ।
अजीतचन्दा बाद फिर कल्याण चन्द आया ॥
राजा दीपचन्द फिर राजा मोहन चन्द ।
राजा प्रद्युमन सिहं और मोहन चन्द ॥

राजा शिवराज सिंह महेन्दर चन्द ।
आखरी का रजा हया राजा मोहन चन्द ॥

चन्दों का पंचायती राज्य

चन्दों लै चलाय कनी पंचायती राज ।
सबु की सल्हा लै कय सुन्दर सुराज ॥
भला भला लोगों कणी सदस्य बनायो ।
उनरी सलाह लै तब सुराज चलायो ॥
ठुला ठुला कोमों का जो छीया बुद्धिमान ।
बलवान गुणवान चतुर सुजान ॥
मौहरा फर्त्याल और कार्की लै बौरा ।
करायत अधिकारी तड़ागी लै औरा ॥
बार बूढ़ा अधिकारी बनाया दीवान ।
रौत लै रौत्याल बिष्ट कठैत सुजान ॥
चन्दौ का जो पैंली रजा सोमचन्द छीया ।
यों सबुकैं बुलै बटि मिटिंग कंछिया ॥
उनरी सलाह लै कंछी परस्ताव पास ।
सभा का सदस्य छी जो सभापति खास ॥
आपु पैली महाराज बनाछी योजना ।
पास कंछी सभापति सदस्य सज्जना ॥
यसीक चलौछी तब चन्दौ कौ सुराज ।
प्रजा कणी सुख हौछी राजाओं कौ राज ॥

चन्द राजाओं की आखरी बंशावली

फिर राजा शिव सिंह शिव चन्द हया ।
महेन्दर चन्द फिर गद्दी मजि अया ॥
एक ऐसी बंशावली एतो दीयी रैंछा ।
कुंवर पहाड़ सिंह बटि चलि ऐछा ॥
पहाड़ सिहां पुत्र राजा हरी सिंह हया ।
हरी सिंह पुत्र फिर मोहन चन्द हया ॥
मोहन चन्दा हया फिर परवत सिंह ।
उनरा पै नन्द सिंह वीक भीमसिंह ॥
भीमसिंह राजेन्द्र सिंह हया श्री मान ।
उनरा आनन्द चन्द छीया विद्यमान ॥
दुसरी आलाका हया कुवर लाल सिंह ।
लालसिंह गुमानसिंह शिवराज सिंह ॥
राजा हरीसिंह और कुवर कर्ण सिंह ।
कुंवर भूपाल सिंह राजा उदय सिंह ॥
कुवर आनन्द सिंह आखरी बंसजा ।
आबयों रै गया खाली आदरा का रजा ॥
इनु हांती आज कल रज सैब कनी ।
फकीर ता नहै गोय लकीर पुजनी ॥
जति जब बनि जनि सब श्री मान ।
आफी आफी बनी जानी मंत्री परधान ॥
जति नेता कवे निहनौ सब बनि जानी ।
कै कणी कवे निमाननौ अपणी चलानी ॥

जै धरम हैई जांछ सैणियों कौ राज ।
और जति नासमझ लौडौं कौ समाज ॥
उघरौ कौ हई जाछ मूल सर्बनास ।
अव्यवस्था हैई जैंछा है जाछौ बिनास ॥
यति एक शलोक छा शास्त्रों प्रमाण ।
बद्री दत्त पाण्डे ज्यूलै द्योछ यौ प्रमाण ॥
सर्वे यत्र नेतारः सर्वे पण्डित मानिनः ।
स्त्रिनायका विनश्यन्ति नश्यन्ति शिशुनायकः ॥
स्कन्ध पुराण मानस खण्ड
योसै हैई गोय कनी चन्दो कौ स्वराज ।
योई दशा घर घर हैई रैछ आज ॥
राजा दीप चन्दै की जो दुसरी छी राणी ।
एक बेर उनीलै यां दिखैदी धौथाणी ॥
उनीलै जमै दी जब आपणौ धिक्कार ।
पलटी दी उनीलै वां सब सरकार ॥
बीका परिणाम हयो कुमाऊँ का अन्त ।
चन्द राजाओं कौ राज हयी गोय अन्त ॥
आपू आपू आफी आफी रज बनी गया ।
एक दुसरै हैं तब लड़ण लै गया ॥
जब राजा मनमानी कण लागी गया ।
सभा का सदस्य लकी पै बिगड़ी गया ॥
प्रजा लै बिगड़ी गेई आन्तक छै गोय ।
चन्दों कौ स्वराज तब कमजोर होय ॥
नैपालों कौ रज तब लड़ण लै गोय ।
एक साला बीच मजि सर करी गोय ॥

कुमाऊँ में गोरखौ कौ राज हैई गोय ।
चन्द्र वंशी राजाओं कौ चांद छिपी गोय ॥

गोरखों का अन्यायी (अनाड़ी) शासन

जब बटि कुमाऊं में गोरखा ऐगया ।
कुमाऊं लैं गढवाल सब में छै गया ॥
बदला उनुलै तब चन्दौ का कानून ।
अपणा अगल और बनाया कानून ॥
नयी २ टैक्स तब इनुलै लगायो ।
चन्दों है बै अठगुण बढ़ै बै लगायो ॥
खेती की रकम बढै कुड़ पर टैक्स ।
भैस गोरू बकरा लै घ्यों दुधों कौ टैक्स ॥
मन्दिर लै शिवालय पनघट गोचर ।
समाजिक धार्मिक जगों पर कर ॥
अफसरों सलामी कर अलग लगायो ।
त्यौहारौ कौ नजरानों अलग लगायो ॥
इन सब करौ कौ यों अनाज लिछियां ।
कुली बरदेंस और अलग लिछियां ॥
यों अन्याय देंखी सब हाई २ कनी ।
आदि कवि गुमानी यों कविता लेखनी ॥
दिन दिन खजाना का भार बोकना लै ।
शिव शिव चूली में बाल निरै एक का लै ॥
तब लै मुलुक त्योरौ छोड़ि नै कोई भाजा ।
इति बदति गुमानी हाय गोरखा राजा ॥

गोरखा रजौकौ तब यस राज हयो।
अठारा सौ मजि फिर अंग्रेज ऐगोायो ॥
उनुलै गोरखों कणि एति बै भजायो।
छोड़ि बै कुमाऊँ वीलै नैपाल बचायो ॥
गढ़वाला रजै लै कुछ बचै लियों।
कुमाऊं का राजाओं लै सब डुबै दियो ॥
हैई गोय कुमाऊं में अंग्रेजों कौ राज।
कत्यूर लै चन्द राजा क्वे निरया आज ॥
अंग्रेज लकि अब एति निरहया।
सन सैंतालीस मजि उलै नहै गया ॥
तभणि बै हैई गोय गणतन्त्र राज।
क्वे निरया एति आब राजा महाराज ॥
कतु आया कतु गया एति क्वे निरया।
इतिहास लेखणिया लेखनै रहया ॥
आधीला पै जसौ हलौ उस लै लेखिला।
लेखक लेखनै रनी जसौ ज्य देखिला ॥
चौथा भाग लकि अब पुरौ हई गोछा।
सम्राट चार भागों मजि छपि गोछा ॥
सुणि लियो पढ़ि लियो करि लियो फाम।
चिन्तामणि सबु हणि जैहिन्द जै राम ॥

॥ इति कुमाऊं के सम्राट चारों भाग ॥

शुभ सूचना

प्रिय बन्धुओ,

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि हमारे यहाँ पुस्तकें बेचने अलावा छपाई का भी प्रबन्ध है। निम्न प्रकार से आपकी सेवा के लिए उपस्थित हैं :—

- विवाह, मुण्डन, गृह, प्रवेश, विजिटिंग कार्ड आदि बाजार से अच्छे तथा रियायत पर छापे जाते हैं।
- हिन्दी तथा अंग्रेजी टाइप में हर प्रकार का काम जैसे बिल बुक आर्डर बुक, वाउचर, पोस्टर इश्तहार सभी काम बाजार से बेहतर होगा।
- हर प्रकार की कुमाऊनी तथा हिन्दी की धार्मिक पुस्तकें छपने का भी प्रबन्ध है। कर्मकाण्ड तथा पूजा-पाठ की पुस्तकें भी छपने का प्रबन्ध है।
- कलैण्डर तथा नए वर्ष की डायरियाँ भी हम अपने व्यापारियों को भेज सकते हैं।
- कार्यालयों तथा स्कूलों से छपी तथा बिना छपी स्टेशनरी भी भेज सकते हैं।

उक्त संस्था कुमाऊनी साहित्य मुद्रक के नाम से जनवरी सन् १९७७ से छपाई यन्त्र का उद्घाटन कुमाऊनी साहित्य मण्डल के संरक्षक श्री कुलानन्द भारतीय जी ने किया था। तब से यह संस्था सुचारू रूप से चल रही है।

कुमाऊनी साहित्य मुद्रक

हर प्रकार की पुस्तकें तथा उच्चकोटि की छपाई का एकमात्र स्थान

चौराहो घंटा, बाजार सीताराम, दिल्ली-११००७६